बूना बाबू

बूना बाबूक वयस बत्तीस वर्षक हैतनि । मुदा दुब्बर-पातर कान्तिहीन शरीर बूढ़ भऽ गेल छन्हि । बाप परुकाँ मरि गेलथिन । बूढ़ि माय, स्त्री आ दू बालकक कम-सँ कम क्षुधापूर्त्तिक भार हिनका ऊपर छन्हि । बी.ए.क डिग्री छन्हि । थोड़े-बीचे अखबार आ इन्टरव्यू, इन्टरव्यू आ अखबार— एहि दू धूरीक बीच बन्हाएल रहथि । सम्प्रति तैसम इन्टरव्यूमे असफल भेलाक बाद आम सड़कपर घाड़ झुकौने चलैत छथि । सोचैत छथि कदाचित कतहु सड़कपर हेरायल धन भेटि जाय ।

□

{kf.kdk

¼ekSfydy?kqpdFkk&laxzg½

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥

—मुण्डक 3/1/1

अमरनाथ

प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान	:	**मैथिली रचना मंच** शुभंकरपुर, दरभंगा-846006
©	:	**लेखक**
पहिल खेप	:	**फरवरी, 1975**
दोसर खेप	:	**दिसम्बर, 2010**
मूल्य	:	**तीस टाका**
मुद्रक	:	प्रिंटवेल, टावर चौक, दरभंगा

डुबैत सूर्य

“मालिक पान खेबैक ?...” छातीमे पानक बासन लटकौने एकटा कान्तिहीन छौँड़ा पुछलक । ओकर वेश-भूषा देखिकऽ पान खयबाक इच्छा नहि भेल । ट्रेन खुजबापर छलैक । फेर ओ आर्त्तस्वरेँ बाजि उठल— माय दुखित छैक । एक रुपैया पान बेचिकऽ भेलैये । डाक्टर बाबू कहने छथिन से सबा रुपैयामे दबाइ होयत । मालिक ! ...दू ठो पान लगा दू ?

हमरालोकनि पाँच आदमी रही । कहलियैक जे पाँच सीकी लगा दही । ओ लगबऽ लागल । एतबहिमे गाड़ी सीटी देलकैक । हम हबर-हबर कऽ पाइ देबऽ लगलियैक । गाड़ी आस्ते-आस्ते चलऽ लगलैक । पाइ लेलक मुदा गाड़ी आर तेज भऽ गेलैक । ई देखि हम कहलियैक— “दोसर गाड़ीसँ झंझारपुर घुरि अबिहेँ ।” ओ प्रतिरोध करैत बाजल— “नहि मालिक ! दबाइ जरूरी छैक । दोसर गाड़ी नौ बजे रातिमे छैक । हमरासबकेँ कुदबाक अभ्यास छैक ।” आ ओ कुदि पड़ल । नमरिकऽ देखलियैक जे प्लेटफार्मपर कूदल तँ, मुदा चित्ते भरे खसि पड़ल । “हमरासबकेँ कुदबाक अभ्यास अछि”— ओ छौँड़ाकेँ की भेलैक ? ओकर मायकेँ की भेलैक ?? की डुबैत सूर्यक संग ओकर भाग्यो डुबि गेलैक ??? ...रेलक गति तेज भऽ गेलैक ।

□

शान्ति

मनीगाछीसँ दरभंगा अयबाक छल । प्लेटफार्मपर धरधरायल गाड़ी अयलैक । केओ पेटी नेने, केओ पेटी आ पटिया नेने आ केओ मोटा-चोटा नेने ट्रेनमे चढ़बाक हेतु दौड़ल । फैलसँ बैसबाक सेहन्ताक कारण सभक दृष्टि एक्केटा डिब्बापर केन्द्रित भऽ गेलैक । कारण ओ डिब्बा खाली छलैक । आन डिब्बा सबमे लद्दमलद्द भीड़ रहैक । किन्तु गेट धरि चढ़िकऽ एकाएकी सब नाक दबने पाछाँ दौड़ि पड़य । हम सेहो द्वारि तक चढ़लहुँ । कारण ज्ञात भेल । एकटा बूढ़ व्यक्ति रातुक सर्दीक कारणेँ ओहि डिब्बामे मरि गेल छलैक । आँखि ओकर भयंकर बुझना जाइत छलैक । निस्तेज आँखिसँ जेना एकटा घुलल-घालल प्रश्न निकलैक— जा धरि जीवन ता धरि शान्ति नहि । मुइलेक बाद खाली डिब्बा भेटि सकैत अछि ?

'क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति'

नदी-नहरि वा पोखरि-चभच्चा लहरि लेबाक लेल, डुबकी-चुभकी लगयबा लेल जतेक नाम-चाकर रहओ, उपयुक्त-प्रयुक्त रहओ; किन्तु पीबा लेल कूप-नलक जल-बिन्दुए लोककेँ बेसी रुचैत-पचैत छैक । महाकाव्य-खण्डकाव्यक जतेक महिमा गाओल जाय किन्तु लोकक कण्ठकेँ मुक्तके काव्य मौक्तिक जकाँ सतत सजैत-मजैत रहैछ । आख्यान-कथा, उपन्यास-गाथा भने काल कटबा लेल पढ़ल जाइत रहओ, किन्तु हृदयकेँ झकझोरबा लेल कवित्तक अन्तिम पाँती जकाँ— चतुर्थ चरणक अर्थान्तरन्यास जकाँ कथाक कणिका प्रासंगिक क्षणिका लोक-मानसकेँ उच्छ्वसित-उल्लसित कय जाइछ । 'देखनमे छोटे लगै घाव करै गंभीर'क कहबीकेँ चरितार्थ कय जाइछ ।

यैह कारण अछि जे थोड़मे कहबाक भंगिमा, रेखाक आकृति अँकबाक बंकिमा, विशेष सहृदय-संवेद्य होइछ । ध्वनिकार धरि अमरुकक एक-एक मुक्तकक लघुताकेँ 'प्रबन्धशतायते'क महत्ता देने छथि । सूत्रकारक महत्त्वहुक प्रशस्तिमे 'अल्पाक्षरम् मसन्दिग्धं सारवद् विश्वतोमुखम्'— विश्व-विस्तृत सारवान् वस्तुकेँ अल्पाक्षरहिमे, थोड़ आखरहिमे कहबाक प्रणाली स्तुत्य मानल गेल अछि । पौराणिक विस्तृत आख्यानसँ कतौक अधिक प्रभाववान् उपनिषदक लघु कथा-प्रसंग ओ रामायण-महाभारतक गाथा-अंग कहल जाइछ । पश्चिमक साहित्यहुमे खलिल जिब्रानक कथा-कणिकाक प्रसिद्धि एही लेल अछि । भारतक विभिन्न आधुनिक भाषहुमे एकर प्रयोग नीक जकाँ लोकप्रियता प्राप्त

कयलक अछि । जीवनक व्यस्तता जहिना बढ़ल जायत, कर्मसंकुल युगक सघनता जहिना ओझरायल जायत, जन-मानसकेँ सोझरयबा लेल कथा-कविताक क्षणिका-कणिका तहिना विशेष आकर्षक-उत्कर्षक मानल जायत । अपन पड़ोसी भाषा-साहित्यक एहि प्रवृत्तिसँ मैथिली व□चत नहि । लघुतर-लघुतम कथाशिल्पक विन्यास मैथिली साहित्यमे आरंभ अछि जे सर्वथा श्लाघनीय मानल जायत ।

प्रस्तुत 'क्षणिका'मे 'इह संसारे'सँ 'परिवर्त्तन' धरि गोट तीसेक कथा-बिन्दु एहि 'नवनवा' लघु पुस्तिकामे आकलित अछि— सभ भाव भरैत, क्षणक सार्थकताकेँ सि□ करैत । आकलनकार छथि मैथिलीक नवयुवक प्रतिभाधर आयुष्मान् श्री अमरनाथ । दरभंगाक अति तरुण उदीयमान श्रीअमरनाथ-श्रीविश्वनाथ युग्म-बन्धु मैथिलीक मेधावी साहित्यिक छात्र छथि । एक कथा विधाक अभ्यासी तँ दोसर कविताक विन्यासी, एहि दुहू अरुणरेखासँ मातृभाषाक सेवा-क्षितिज विशेष रंजित रहओ— एहि शुभाशंसाक संग प्रस्तुत लेखकक प्रतिभा, श्रम ओ संलग्नताक संवर्धना करैत हार्दिक कामना जे—

'वर्धस्व देशं विमलीकुरुष्व'

(प्रो०) सुरेन्द्रझा 'सुमन'

(माघी-नवरात्र)
चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय,
(ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय)
दरभंगा

ममता

"...भगवान भल करथु । बहुत दिनका बाद पेट भरि दाना भेटल ?" छड़ी टेकैत बूढ़ व्यक्ति बाजल— "जहियासँ बेटा-बहु निकाललक तहियासँ नीक-निकुत कतहु नहि भेटल । आँकड़-पाथर खा कऽ दू बरीस रहलियै ।"

"आ ई आम नहि खेलह ?" —लोचन बाबू पुछलथिन ।

"मालिक, होइये जे एक बेर ओकरा सबकेँ देखि अबियैक । बूढ़क कोन ठेकान ! आइ छी काल्हि नहि । पैरमे घाव अछि, बाँतर भऽ जाइत । लऽ जाइत छी, ओकरा सबकेँ सनेसमे देबैक । किछु रुपैया भीख मांगिकऽ जमा भेल छैक । सेहो नेने जाइत छी । बेर-विपत्तिमे काज औतैक ।"

"बेटा-बहु ओतेक कष्ट देलकऽ, तखन फेर ओकरा सबहक हेतु उताहुल किएक छह ?"

"ठीक कहैत छी मालिक ! हम नहि जेबैक । ओ सभ बड़ निर्दयी अछि ।"

किछु क्षण मौन रहि, उत्तेजित होइत बाजल— हम जेबैक... जेबे करबैक— ओ टाटक घर...कातमे नारिकेरक गाछ... सोनमा बेटा... ऊभर-खाभड़ रस्ता... नहि मालिक, जेबे करबैक । आ ओ छड़ी टेकैत द्रुतगतियेँ बढ़ि गेल ।

□

भग्न

गोकुल बाबू गाममे प्रख्यात रहथि । नामी रहथि खतियान बदलि जमीन हड़पबामे, लोकक धन छद्म रूपेँ चोरैबामे । रुपैया आ जमीन बेहिसाब बढ़ल चल गेलनि । एक दिन गोकुल बाबू चिन्तनक क्रममे रहथि । चेतन मन कहलकनि— अहाँक वयस बासठिम थिक । बइमानीक जमीन आ रुपैया लऽकऽ की करब ?

उप-चेतना ठोकल जबाब देलकनि— जा धरि छी ता अपने भोगब आ मुइलापर बेटा सब सुखी रहत । श्यामनारायण बाबूक बेटा जकाँ हमर बेटा रने-बने नहि भटकत ।

ई संघर्ष ओतहि समाप्त भऽ गेलनि । दोसर दिन गोकुल बाबू जमीन देखऽ जा रहल छलाह । अकस्मात छातीमे दर्द उठलनि आ बाटहिमे मरि गेलाह । जिज्ञासामे एक व्यक्ति आयल रहथिन । बेटा सबकेँ कहलथिन— ''अहाँ सब ले' तँ ओ खूब अरजि कऽ गेलाह अछि । बाप हो तँ गोकुलबाबू सन !'' एहि बातपर टनकिकऽ एक बेटा कहलथिन— ''ओ की दऽ जेताह ? तेहन बैमान छलाह जे सब हमरासबकेँ बैमानक बेटा कहैत अछि।'' जेठ बालक जे उतरी पहिरने रहथिन से उत्तेजित होइत बजलाह— ई श्रा□ जंजाल भऽ गेल अछि । बूढ़ा मुइलाह कि घरकेँ भूजि देलनि !

एतबहिमे गोकुल बाबूक पोसल बिलाड़ि कानऽ लगलैक । सब ओकरा मारऽ दौड़लैक ।

चिन्तन

सम्प्रति मानव-समुदाय घिरनी जकाँ कोनो अस्तित्वहीन वस्तुक खोजमे नाचि रहल अछि । सुख आ शान्तिक स्थूल अर्थकेँ बुझैत प्रयत्नशील मनुष्य अन्ततः घोर निराशामे घुरिया जाइत अछि । मानवक गुणवाचकता (Connotation) थिक— पशुत्व आ विवेक । मुदा मात्र अर्थ आ कामक कामना करैत मानवकेँ पशुसँ कहाँ धरि फराक बुझल जायत ? विवेकक मिथ्या आवरणमे विवेकशील मानव कहायब कतेक दूर धरि समीचीन होयत ? इएह कारण थिक जे कहल जाइत अछि जे मानवसँ मानवताक ह्रास भऽ रहल अछि ।

उपनिषदमे कहल गेल अछि— 'यो वैभूमा तद्मृतम् अन्य दार्तम्' अर्थात् जे स्थायी एवं नित्य (Eternal) अछि से सुख थिक आ जे क्षणिक तथा अनित्य अछि से दुःख थिक । यदि एहि मूलमंत्रकेँ निकष मानि लेल जाय तँ स्पष्ट भऽ जायत जे भौतिकवाद सुखक आकांक्षी अछि कि दुःखक । वस्तुतः भौतिकवादी प्रवृत्ति दिशि अग्रसर होइत ई समाज कतऽ जायत ? मानवक मशीनीकरण कोन स्वर्णिम फलकेँ निर्गत कऽ सकैछ ? 'स्व'मे केन्द्रित मानव अन्ततः की कऽ सकैछ ? की शारीरिक सुखक पूर्ति करबे मानवक लक्ष्य थिक ? आदि प्रश्न सभ पर विचार करैत-करैत पोथी पूर्ण भऽ गेल । कथात्मक परिधानक अभावोमे एहि प्रश्न सभपर विचार कयल जा सकैत छल मुदा तखन ओ नीरस वैचारिक ग्रन्थ भऽ जाइत । लघुकथाक प्रसंग हम एतबे कहब जे ई अनुभूतिजन्य मार्मिक प्रसंगक साकार रूप थिक । कथाक रूप भने लघु हो मुदा चिन्तनक क्षेत्र विस्तृत अछि ।

मुदा ई सभ प्रक्रिया मानसिक परिधि धरि सीमित रहि जाइत यदि गुरुवर श्री सुमनजीक आशीर्वाद, श्रद्धेय श्री किरणजीक मार्गदर्शन, कविवर श्री अमरजीक अशेष स्नेह, पूज्य पितृव्य श्री लक्ष्मण झाजीक प्रेरणा आ सुहृद्वर श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर'जीक दृढ़ सम्बल नहि भेटैत । पूज्य मातामह श्री जगन्नाथ झाजीक असीम प्रोत्साहन, डा० श्री दुर्गानाथझा 'श्रीश'क दिशा-निर्देशन आ गुरुवर प्रो० श्रीभक्तिनाथसिंह ठाकुरक अमित आत्मीयताक फलस्वरूप पोथीक प्रणयन भऽ सकल । श्री छत्रानन्दजीसँ अनुखन प्रोत्साहन भेटैत रहल अछि । पूज्य गुरुवर डा. श्री रघुवंश झाजीक प्रेरणा सतत दार्शनिक भाव-तरुकेँ पल्लवित-पुष्पित करैत रहल अछि ।

आदरणीय कुलपति डा. श्री मदनेश्वर मिश्रजीक आशीर्वचन ओ प्रेरणा जीवनक सम्बल बनल रहत, से विश्वास अछि । मुदा कृतज्ञता-ज्ञापनक हेतु हमरा शब्द नहि भेटैत अछि, मात्र आशा अछि जे —

'अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ।'

श्री अमरनाथ झा

वसंत पंचमी, 1975 ई.
शुभंकरपुर ड्यौढ़ी, दरभंगा ।

दू बिन्दु

रमजनमा आ कंटिरबामे बच्चेसँ यारी लागल छैक । चलै छल एके संगे मुदा घुमैत छल दुनू अलग-अलग भऽ । यैह सभदिनुका नियम छलैक ।

तीन बजे राति । दुनू कोदारि आ खन्ती लऽकऽ बिदा भेल । रमजनमा अपस्याँत होइत भीड़परहक माँटि काटऽ लागल ।

□ □ □ □ □

सन्ध्या काल एक पोटरीमे झींगा माछ, मरचाइ नेने रमजनमा आयल । आवेशसँ स्त्रीकेँ कहलकैक— "हे खूब नीक कऽ रन्हिहेँ । भात ने गील होउक ।" ओकर स्त्री हबर-हबर रान्हऽ लगलैक । बीचमे मडुआ रोटी आ कने कथक चटनी दऽ गेलैक ।

आठ बजे राति ।

ताड़ी पीबिकऽ भेर भेल कंटिरबाकेँ ओकर बहु, छोट-छोट बेटा सब नालीक कातसँ घिसियौने लऽ जा रहल छलैक ।

□

मशीन

संध्या काल बोकारो होटल दिस हमरालोकनि बढ़ल जा रहल छलहुँ । बाटमे एक परिचित भेटलाह । पुछलियनि— एखन हाथमे रजिस्टर नेने कतऽ जा रहल छी ?

ओ उत्तरमे कहलनि— क्लबमे सेहो काज करैत छियैक ।

हम— आफिसमे कतेक काल काज करैत छी ?

ओ— नौ बजे भोरसँ पाँच बजे सन्ध्या तक आफिसमे आ छौ बजे संध्यासँ दू बजे राति धरि क्लबमे ।

हम— गाममे जमीनो होयत ?

ओ— हँ, करीब दस बिगहा ।

हम— तखन तँ अहाँ सोलह घंटा काज करैत छी । एक आध-घंटा जाइ-अबैमे सेहो लागि जाइत होयत । तखन पारिवारिक स्नेह आ जीवनक मूल्य की बुझैत छियैक ?

ओ उपहासात्मक हँसी हँसैत कहलनि— इह, अहाँ सन आलसी व्यक्ति हमरा नहि भेटल छल । रुपैया कतेक भेटैत अछि से नहि देखैत छियैक ! नओ सए पलस आठ सए अर्थात् सत्रह सए पहिली कऽ भेटैत अछि । सोचैत छी जे किछु आर काज कऽ दू हजार पुरा ली ।

कानमे मसीन घड़घड़ायल । मनमे सोचल बात ओहिसँ प्रतिध्वनित भऽ उठल— मानव मसीन भऽ गेल ! मानव मसीन भऽ गेल !!

□

आशीर्वचन

चि० श्री अमरनाथ झा रचित 'क्षणिका' लघु-कथा संग्रह पढ़ि गेलहुँ । अमरनाथजी अल्पवयस छथि, परन्तु साहित्यिक अभिरुचिसँ ओत-प्रोत छथि । हमरा खूब प्रसन्नता अछि जे एखनहिसँ ई साहित्य-सृजनमे लागि गेल छथि । हम आशीर्वाद दैत छिऐन्हि जे ई मैथिली साहित्यक भंडारकेँ भरैत रहथु ।

डा० मदनेश्वर मिश्र
कुलपति

15 फरवरी '75
ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा

क्रम

दिन-राति

बौकू बाबू पंडित छथि । एकटा पुरान पाठशालामे शिक्षक छथि । भोर होइत छैक आ ओ लोटा नेने बाध दिस जाइत छथि । दतमनि करैत छथि । स्नान कऽ खूब सुन्दर जकाँ त्रिपुण्ड करैत छथि । तकर बाद कहियो भात-दालि तँ कहियो भात-दालिक संग कोनो तरकारी सेहो खाइत छथि । विद्यार्थी नहि छन्हि पढ़ेबा लेल । एक-आधटा कहियो विद्यार्थी चल अबैत छन्हि । गाम-घरक गप्प करैत छथि । अधिक दिन विद्यार्थीक अभावमे सूति रहैत छथि । साँझ होइते फेर कानपर जनउ चढ़ा बिदा होइत छथि । राति कऽ आठ बजैत-बजैत खा कऽ सूति रहैत छथि । एक दिन गप्पक क्रममे नरेन्द्र पुछलकनि— पंडितजी ! बैसल रहैत छी । किछु उपयोगी काज किएक ने कऽ लैत छी ? जेना कोनो संस्कृत ग्रंथक टीका ?

बौकू बाबू— फुरसति नहि होइत अछि । कतेक तरहक झंझटमे फसल रहैत छी ।

राति-दिन आ दिन-राति बीतल जाइत छैक मुदा हुनक एहि दैनिक नियममे बिथुत होइत क्यौ नहि देखलकनि अछि । किछु दिनुका बाद दिन आ राति तँ रहतैक मुदा पंडितजी ओकरा नहि देखि सकताह ।

▯

नीलकंठ

करुणानिधान महादेवक आँखिसँ अश्रु झड़ि रहल छलनि । पार्वती विस्मित होइत पुछलथिन— असमयमे नोरक वर्षण किए कऽ रहल छी ? कोन दुःख भेल अछि ?

महादेव खिन्न होइत बजलाह— संसारमे जतऽ देखू विष देखना जाइत अछि । सम्पूर्ण संसार विषमय भऽ गेल अछि । विषपान कऽ सोचने रही जे संसार विषरहित भऽ जायत, मुदा हमरा नीलकंठ कहौने की भेल ?

□

चीत्कार

आइ बूढ़ मरि गेलाह । थोड़-थार लोक सभ कनलकनि । चचरी सजाओल जाय लगलनि । दू व्यक्ति नाम-नाम डेगसँ जारनि कीनऽ आगाँ बिदा भेलाह । किन्तु सहसा दूनू व्यक्ति रुकि गेलाह । एहन सन बुझना गेलनि जे बूढ़क थकिऔल रुपैया चीत्कार कऽ रहल होइक— एहि बूढ़केँ जरैबाक हेतु हमहीँ सब पर्याप्त छी । जारनिक कोन काज ?

□

दोसर संस्करणक सम्बन्धमे

फरवरी, 1975 ई.मे 'क्षणिका'क प्रकाशन भेल रहय आ वर्ष बितैत-बितैत सभ प्रति बिका गेल रहय । यत्किंचित बिलहने सेहो रही । साधारणतः मैथिलीमे पाठ्य-पुस्तकक अतिरिक्त कोनो पोथीक दोसर संस्करण करबाक प्रथा नहि छैक । तत्कालीन मित्र लोकनि कहलनि जे घरक आँटा गील नहि करू । तेँ तखन साहस नहि भेल रहय । एम्हर 1996 ई.मे पटना विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'मैथिली गद्य साहित्य'पर राष्ट्रीय संगोष्ठीमे पठित (पछाति प्रकाशित) निबंधमे सुप्रसि□ साहित्यकार डॉ. श्रीरामदेवझा 'क्षणिका'केँ एकहि लेखकक रचित समग्र लघुकथाक प्रथम प्रकाशित संग्रहक रूपमे चिंहित कयलनि, तँ स्वाभाविक छैक जे लोकक ध्यान 'क्षणिका' दिस पुनः आकृष्ट भेलैक । तथापि हम आलस्यमे पड़ल रहलहुँ । मुदा कोलकातासँ श्रीअनमोल झा आ दिल्लीसँ श्री मनोज कुमार कर्ण 'मुन्ना'क बेर-बेर आग्रहसँ विवश भऽ 'क्षणिका'क दोसर संस्करणक

प्रकाशनक हेतु अग्रसर होबऽ पड़ल । आब जखन ई अपनेक हाथमे अछि तँ हमरा कहबामे संकोच नहि होइत अछि जे दोसर संस्करणक श्रेय एही दूनू युवा लेखक कें छनि । एतदर्थ हम आभारी छियनि ।

आशा करैत छी जे पूर्ववत् पाठकलोकनि एहि संग्रहक प्रकाशनक स्वागत करताह ।

अमरनाथ

कार्तिक पूर्णिमा, 2010
दर्शनशास्त्र-विभाग
ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा

इह संसारे

आइ ओ पीपरक गाछ सुखा गेलैक । तरुणी दल जतय भक्ति-भावसँ पूजा करैत छलि, जाहि गाछपर फूल, सिन्दुर अक्षत चढ़बैत छलि ततय मरुभूमिक विकरालता नाचि रहल छलैक । लोकक कहब छैक जे भगवान श्रीकृष्ण ओहि गाछपर बैसैत छलथिन । प्राय: ओहो गाछकें तेजि देलथिन । ई सत्य जे ओकर जीवनी शक्ति, रस-पियूष सुखा गेलैक, किन्तु तें की निरसि देब उचित थिक ? मुदा एतय तँ...

''मुदा एतय तँ की ? संसारक इएह रीति-रिबाज छैक''—चटक्कीसँ खोँता उजाड़ैत कौआ बाजल ।

परिवर्तन

यमराज निर्णय सुना रहल छलथिन— सुरेश्वर ! कतेक अधम कोटिक योनिमे जनम लऽकऽ कष्ट सहैत मनुष्य भऽकऽ जन्म लेबऽ जा रहल छी । मनुष्य की हेतु भऽ रहल छी ?

सुरेश्वर रटल सुग्गा जकाँ बाजि उठलाह— प्रेम, त्याग, क्षमा, भक्ति... ''हँ, ई सब खूब मोन राखब''—यमराज बुझबैत कहलथिन— ''तखने अहाँ मोक्षकेँ प्राप्त करब ।''

□ □ □ □ □

बत्तीस बरखक बाद ! जहलक कैदी कृष्ण बाबू छाती पीटैत बजलाह— घड़ी चोरी भऽ गेल ! आब हम एतै मरबैक !! कोन पाप घेरलक जे झंडा उठाबऽ गेलहुँ ।

एतबहिमे दू संतरी दौड़ल आयल । सुरेश्वरक गालपर दू थापर मारैत कहलकनि— घड़ी निकाल । जहलोमे चोरी ! कहू तँ नीक घरानामे जनम लेके नाम हँसबैहे ।...

चित्रगुप्त कानपरसँ पेंसिल लऽ पुरना रजिस्टरमे किछु नोट करऽ लगलाह !

□

सुखायल डारि

ठक...ठक...ठक... आ ओ अनवरत मड़ैयासँ पेटी केँ ठोकि रहल छल। कतेक दिनसँ सोचने रही जे मजगूत पेटी बनाबी । रामटहलक हाथेँ बनेबाक इच्छा छल । ओ नामी-गामी लोहार छल । दस वर्ष भेलैक अछि जे खन्ती, कोदारि बनाकऽ देने छल । से एखनो धरि खूब मजगूत अछि । लग जाकऽ पुछलियैक— रामटहल ! पेटी बना देबेँ ?

ओ कहलक— ''हँ मालिक ! जखने कहबैक, तखने बना देबैक ।'' एतबहिमे ओकर ध्यान द्वारि लग ठाढ़ि स्त्री दिस गेलैक । घुमिकऽ ओ फेर काज करय लागल । मुदा दू बुन्न नोर ओकर गालपर टघरि अयलैक । विस्मित होइत पुछलियैक— रामटहल ई की... ?

ओ शून्यमे कोनो वस्तुकेँ तकैत कहलक— नहि पुछू मालिक हमरासँ। जवान बेटा गुजरि गलैक भोरे । पेटक खातिर मड़ैया उठौने छियैक । जे चल गेल, तकरा ले' कय घड़ी सोच करबैक !

□

एकटा प्रश्न

चिड़ै अयलैक । खूब सुन्दर-सुन्दर । बच्चा सभक हेतु बुझू जे खेलौना भऽ गेलैक । केओ पानि देलकैक, केओ धान देलकैक । केओ ओकरा बजेबाक हेतु कण्ठ दाबि देलकैक । भरि दिन ओकरा नंगो-चंगो करबामे सब लागल रहलैक । कृष्णमोहन दोसर दिन किछु अबेर कऽ आयल । तावत चिड़ैक घेँट काटल जा चुकल छलैक । ओ स्वाभाविक जिज्ञासासँ बाजल— चिड़ैकेँ मारि देलियैक । मरैकाल ओ कानल होयत। ओ तँ ईहो कहने होयत जे हमरा नहि मार ।

एहि प्रश्नपर सभ बच्चा हँसऽ लागल । ओ मौन रहल । माटिपर खसल खून जेना ओकरा कहि रहल होइक— ओ अपन भाषामे नेहोरा-पाती कयने रहैक । ओ कानल-कलपल रहैक । मुदा बच्चासब तकरा नहि सुनलकैक । नहियेँ सुनलकैक ।

▯

लालटेम

भोर भऽ गेल रहैक । बसस्टैण्डपर बसक प्रतीक्षामे बैसल रहथि। दू वर्षसँ रेलवेक प्लेटफार्म वा कोनो खंडहर बनल धर्मशालाकेँ अपन बासडीह बनौने रहथि । बैसल-बैसल सोचय लगलाह जे कतेक दिन धरि बौआइत रहब । रुपैयो समाप्त भऽ गेल । संगमे चलनिहार काशीनाथकेँ पुछलथिन— की हौ काशीनाथ ! आब की करबऽ ? गाम जैबह की नहि ?

काशीनाथ— हम की करब ? जे करबाक हो से करू ।

काशीनाथक उकसौलापर गेनाइ बाबू गामक चारि बिगहा जमीन बेचि बम्बइ, कलकत्ता घुमि आयल रहथि । होटलमे नाच-गान देखि आयल रहथि । दूटा बेटा, कुमारि बेटी आ स्त्रीकेँ छोड़िकऽ चल गेल रहथि । तेँ डर ई छलनि जे गाम गेलापर लोक सब मारत । हरिनारायण आ योगेन्द्र तँ कपारे फोड़ि देत। मुदा रुपैया सठि गेल रहनि । गाम जायब आवश्यक भऽ गेलनि । गेनाइ बाबू भृकुटी तनलनि । मुक्का बन्हलनि आ तखन बसस्टैण्डपर बैसल घोषणा कयलनि— गाम पहुँचिते कहबनि जे जे केओ हमरा टोकब तनिकर कपार दू खंड कऽ फोड़ि देब। बाजारमे कीरीच कीनि लेबय जाइत छी ।

गाम पहुँचलाह । आगाँमे अपरिचित सन बेटा, बेटी आ स्त्री ठाढ़ि रहथिन । एकटा छोट-छीन लालटेम बरैत छलैक । लालटेमक फकफकीसँ एकटा प्रश्न-चिह्न बनि जाइक ! ओ गुम्म भेल बैसल रहथि— हारल जुआरी जकाँ ।

▯

प्रश्न-चिह्न

''ई कुकुर हम चारि सौमे लेल अछि'', —आफीसर साहेब दुलारसँ कुकुरक पीठपर हाथ फेरैत बजलाह । प्रदीप बाबू कन्ट्रेक्टरी लेबऽ आयल रहथि । बजलाह— ''यदि एहने दोसर भेटैत तँ हमहूँ लितहुँ। अहाँक बेजोड़ 'च्वाइस' अछि ।'' आफीसर साहेब नोकरकेँ बिगड़ैत कहलथिन— 'देख तँ दू बाजि गेलैक अछि । एखन धरि टोमी (कुत्ताक नाम) मीट नहि खयलक अछि। जो जल्दी नेने आ ।'' एतबहिमे फाटल-चीटल कपड़ा पहिरने एक व्यक्ति ओसारापर चढ़ि आयल । ओहि व्यक्तिक शरीरमे कम्पन भऽ अयलैक आ ओ आफीसर साहेबक पैरपर खसि पड़ल । कुहरैत बाजल— मालिक ! तीन दिनसँ भूखल छी । किछु खुआउ, नहि तँ...

''अरे रामटहल जल्दी आ । फसदिया लोक आबि गेल ।'' आफीसर साहेब हड़बड़ाइत बजलाह— ''किछु दऽकऽ एकरा निकाल । ठीकेदार साहेबसँ खानगी करबाक अछि ।''

''हमर अइँठमे एगो रोटी बाँचल छैक । से दऽ दैत छियैक ।'' रामटहल एक बाटीमे मांस, करेजी आदि कुकुरक आगाँ राखि देलकैक आ जल्दीसँ एक गोट अइँठ रोटी ओहि व्यक्तिक हाथमे दऽ देलकैक । कुकुर खा रहल छल आ ओ व्यक्ति सेहो खा रहल छल । मुदा वातावरणमे एकटा प्रश्न-चिह्न बेर-बेर बनैत छलैक आ मेटा जाइत छलैक !!...

□

धर्मशाला

भगवान कहलथिन— बुझलियैक किने ! अहाँ सत्तरि वर्षक हेतु धर्मशाला जा रहल छी । किछु बइमानी करबैक तँ ओतुका परमिटमे कमी भेल जायत ।

नमोनारायण बजलाह— जी हुजूर ! जी हुजूर !!

□ □ □ □ □ □

नमोनारायण जन्म लऽकऽ पैघ भेलाह । वैद्य सेहो भऽ गेलाह । आब ओ कहथिन— गोपालकृष्णक मंदिर हम बनाओल अछि । हमर घर इलाका भरिमे सबसँ सुन्दर अछि । हमर बेटासब ओकालति करैत अछि। हमर नाम उजागर करत । हम मरबासँ पूर्व 'विल' कऽ जायब। वैद्य भऽकऽ खूब अरजल अछि । आब बेटा सब राखय वा बिलटाबय।

आ ओ पचास वर्षक अवस्थामे ई धर्मशाला छोड़िकऽ चल गेलाह ।

□

से ओ कहने रहय

ओकरा क्षयरोग भऽ गेल रहैक । भरि दिन काज कयलाक बाद दू रुपैया भेटैत छलैक । ओहीसँ जीवनक निर्वाह होइक । शरीर बेकार भऽ गेल रहैक। आब ओहो दू रुपैया कतयसँ भेटतैक ? ई सोचि हम पुछलियैक— ''आब तोहर निर्वाह कोना हेतौक ?'' ओ निफिक्किर होइत कहलक— आब कथी के फिकिर हइ ? बेटा जवान हो गेल !

किछु दिनुका बाद ओकर स्त्री आयलि छलि । कहलक— बाबू श्रा□ ले' किछु पाइ देबैक ?

हम पुछलियैक— बेटा गामेपर छौक ?

ओ कहलक— कहाँ मालिक ? ओ तँ कलकत्तेमे छैक । मरबो काल कहाँ आबि सकलैक ।

किछु दिनुका बाद ओकर बेटा हमर खेतमे काज करैत रहय । हम कातमे मे ठाढ़ भऽ देखैत रही । ओ बीड़ी सुनगबैत कहलक— मालिक ! हम सब चारिये बजेसँ माटि काटब सुरू करैत छियैक । भरि दिनमे आठ-दस टाका भऽ जाइत अछि ।

हम कहलियैक— तेहन ने महगी अयलैक अछि जे सबकेँ कठिन परिश्रम करय पड़तैक ।

ओ कोदारि चलबैत कहलक— बाबू महगी की करतैक हमरासबकेँ ? माटिये खाकऽ जीबैक । इच्छा अछि जे ओकर नामपर किछु 'कीरीत' कऽ दियैक ।

□

तुलसी चौरा

आइ तुलसीक गाछ सुखा गेलैक । सुन्दर हरियर डारि-पातक बदलामे सुखायल-टुट्ठ गाछ रहि गेलैक अछि— भग्नावशेष जकाँ । कातिक मास दीप लेसल जाइत छलैक । तुलसीक पात तोड़िकऽ भगवानकेँ चढ़ाओल जाइत छलनि । तुलसी गाछक कातमे ओलतीमे लटकल सुग्गा सब दिन पिजड़ाक भीतरसँ तुलसी गाछकेँ देखैत रहैत छलैक । से सुग्गा आइ शोकसन्तप्त होइत बाजल— एहि गाछक छोट-छीन छाहरिमे रामनारायण बाबूक बाप, पित्ती आ सद्यः जनमल पुत्रकेँ अन्तिम समयमे पाड़ल गेल रहनि । मुदा एहि तुलसी गाछक की इन्तजाम कयल गेलैक ?

□

पपीहा

जड़कालाक राति । दस बजैत-बजैत गाम बीरान भऽ गेलैक । गीदड़क भूकब, झिंगुरक संगीत आ नाना तरहक रतिचर जीवजन्तुक ताल-लय टा रहि गेल छलैक । मुदा एखनहुँ ओतऽ एकटा अँगैठी जरि रहल छलैक । बूढ़ा-बूढ़ी आगि तापि रहल छलीह ।

बूढ़ा पुछलथिन— घरमे किछु नहि अछि ? ई तँ तेसर दिन थिक ?

बूढ़ी— तँ की करबैक ? भगवानेक भरोस !

बूढ़ा— ‘‘सागो-पात नहि छैक ।’’

बूढ़ी— कहाँ ?... बेटा सभ कहाँ किछु पठौलक ?

बूढ़ा— छोड़ू ओकरा सबहक गप्प । किछु गूड़ी-चूड़ी वा फुटहा होयत !

बूढ़ी— ओह, रहैत तँ हम लाथ करितहुँ नारायणबाबू चाउर मांगऽ आयल रहथि । आब फेर हुनकासँ कोना मंगितियनि ?

बूढ़ा— तखन पानियो पीबि ली । लाउ, लोटा कहाँ अछि ?

बूढ़ी— लोटा तँ परसूए बन्हकी लागि गेल ।

बूढ़ा— बेस, तखन कलेपर जाकऽ पानि पीबि अबैत छी ।

□ □ □ □ □

पछबरिया बाड़ीमे नुकायल चोर निराश भऽकऽ सोचैत अछि जे गामक तँ इएह हाल ! जतय जाउ, ततय खुक्ख । हे भगवान ! कोन दिन कयलियैक !! ई व्यवसाय छोड़य पड़त । तखनहि कोनो गाछपरसँ पपीहा पी-पी कयलकैक— आब दाना कहाँ ! आब दाना कहाँ !!...

□

घुरिआइत जीवन

मोटर हवाइजहाज...अशोक होटल...सुन्दरी नर्तकी... शराब जेना ई परिधि हो, पूर्वजक अर्जित धन-रेखा आ तकर केन्द्र होथि राकेश मजुमदार । ...नहि ई खराब अछि । ई शराब नहि दोसर... दोसर... । सुन्दरी.. एक दू तीन अन्तहीन... असल सुख कहाँ ? मजुमदार साहेब सोचैत छथि ।

मोटरकार विभिन्न तरहक... ओह, ई नहि... ओ कहाँ बढ़िया अछि ! छनन्...छुम पायलक झंकार । नाच... गान... मद्यपान... किन्तु सुख कहाँ !...प्यास अतृप्ते अछि । पूर्ण कहाँ भऽ रहल अछि ? कोना होयत ! सुख कोना भेटत !! सुख... सुख आ सुखक खोजमे ओ मरि गेलाह ।

□

फूसक घर

फूसक घर । कातमे टाँगल लालटेन । छिड़िआयल पूजाक बासन । कुशक आसनपर बैसल एकटा वृ□ । सब दिन स्कूलमे पढ़ैबाक हेतु जयबा काल ई दृश्य देखबामे आबय । स्कूलसँ घुरैत काल देखियनि जे ओ वृ□ किछु पढ़ि रहल छथि वा ककरो किछु पढ़ा रहल छथिन । से आइ हठात् जाइत काल हुनकर घरपर भीड़ लागल देखलियनि । भोरमे मृत्यु भऽ गेल रहनि । साइकिल परसँ उतरि सहटिकऽ देखऽ गेलियनि । एक व्यक्ति कहलक— निष्काम भाव सँ ओ लोकक उपकार करैत छलथिन, वैद्यगिरी जनैत रहथि । पाइ केओ देबाक प्रयत्न करय तँ ओ कहथिन जे जीबाक हेतु अन्न भेटि जाइत अछि, रहबाक हेतु घर अछिये आ पहिरबाक हेतु कपड़ा भऽ जाइत अछि । तखन पाइ लऽकऽ की करब ? तेँ फूसक घरकेँ दुमहला नहि बना सकलाह, कहियो नीक भोजन नहि कयलनि । फाटल वस्त्र पहिरने जड़कालामे ठिठुरि कऽ मरि गेलाह । जीवनक सुख ओ कहाँ किछु बुझलथिन ? चाहितथि तँ हेम्योपैथीक डाक्टर महेश जकाँ कमाकऽ खूब औज-मौज करितथि । मुदा आनन्द पयबाक लूरि नहि छलनि ।

की ओ सुख नहि कयलनि ? आ आनन्द लुटबाक लूरि नहि छलनि ? प्रश्न टकरा कऽ रहि गेल । हुनक आँखिसँ पूर्णताक बोध भऽ रहल छल ।

□

स्फुलिंग

ओ आदमी की छलाह, बुझू जे आगिक जरैत चिनगी रहथि जाहिसँ सदिखन स्फुलिंग उड़ैत रहैत छलनि—

‘‘ऐँ ओ एम.ए. पास कऽ गेल ? ठहरू डीहकेँ नीलाम करा दैत छियनि ।’’

‘‘गणेशक ई ओकाइत भेलैक जे ओ जमीन खरीदि लेलक ? ओकर उन्नतिमे बाधा देबाक चाही !’’

‘‘कहू तँ ओ एम.एस-सी. वरकेँ अपन जमाय बनाओत ? सि□ान्त भऽ गेलैक । विवाहमे कोनो अड़ंगा ठाढ़ कऽ दियैक ।’’

‘‘नारायणक बेटाकेँ नोकरी भेटि गेलैक ? आब तँ ओकर घर नीक भऽ जेतैक । किछु करबाक चाही ।’’

इएह सब सोचैत एकसठिम वर्षक अवस्थामे मरि गेलाह । सारापर बबूरक गाछ बेस पैघ भऽ गेल छन्हि । ओहि दिन रामलोचन अपन बेटाकेँ डटैत रहैक— हे रे बाउ ! बबूरक गाछ दिस नहि जो । ओहिपर भूत बैसैत छैक !

□

माटि-पानि

जेना लगैत अछि जे सभकेँ यात्रे करबाक छैक । ट्रेन, बस सब कथूमे लदमलद्द भीड़ । यात्रा करब दुरूह बुझि पड़ैत छैक । ओहि दिन मधुबनी जयबाक छल । ऊपर-नीचाँ बस भरल छलैक । कातमे पिचड़म-पिचड़ा होइत ठाढ़ भऽ गेलहुँ । ततबहिमे कोट-पैंट आ टाइसँ सज्जित एक व्यक्ति सिगरेट धुकैत बजलाह– ''भारतक व्यक्तिसब बड़ गमार अछि । रूस आ चीनमे एहन लोक भेटत ! हे देखू बुढ़ियाकेँ । मैल-कुचैल कपड़ा पहिरने बीड़ी पीबैत अछि ।'' कोनो तरहक सभ्यता छैक ! आ फेर मुँह बिचुकबैत बजलाह– ''भारतक माटि-पानि जेना सड़ल होइक !'' एतबहिमे कन्डक्टर आयल । टिकटक हेतु हम रुपैया दऽ देलियैक । कोट-पेन्टवला बाबूसँ जखन रुपैया मांगऽ गेलनि तँ ऊपर नीचाँ सब जेबी ताकऽ लगलाह । ललाटपर घामक बुन्द टघरि अयलनि । अफसोच करैत बजलाह– ''जाह, धोखामे मनीबेग डेरेपर छुटि गेल ।'' बस रुकलैक आ हिनका बससँ उतरऽ पड़लनि । मुदा तखनहि ओ बुढ़िया बाजलि– ''कतेक पाइ लगतनि कंडक्टर बाबू ?''

''एक रुपैया ।''

''हे लिअ, हम दैत छी ।'' आ बुढ़िया मैल-कुचैल कपड़ासँ एक रुपैया निकालिकऽ दऽ देलकैक ।....

नचैत धरती

गामक बीचमे सोना बाबूक घर छनि । मुदा बुझि पड़ैत छैक जे हुनकर घर गामसँ एकदम फराक होइक । नारायणक गाय कने खेत चरि गेल रहनि तँ ओकरापर फौदारी कयने रहथिन । बौकू बाबूक संग कने झगड़ा भऽ गेलनि । लगले एक सय सात दफा चलौने रहथि । अभियोग लगौने रहथिन जे ओ हमर घरसँ लोहिया, करछु चोरबऽ आयल रहथि । दोकानदार उधारीक तगादा करनि तँ ओकरा फज्झति करय लगथिन । बात बढ़ैत गेलनि । क्रोधमे आबि सोना बाबू छड़ीसँ मारि बैसलथिन । दोसर दिन दुनू गोटे मधुबनी जाकऽ मुकदमा दायर कयलनि । सोना बाबूक कहब छन्हि जे गामकेँ सरि कऽ कऽ राखि देबैक । घर पर बैसल मुकदमाक फाइल सब देखल करैत छथि । बूढ़ भऽ गेल छथि । किन्तु कखनो कऽ टाइटिल सूट, खूनी केस आदिक हेतु मधुबनी जाइत छथि । हिनकर दुश्मन सभमे गंगेश, दयाकान्त मरि गेलथिन । बीचमे कतेक नव दुश्मन बनलथिन अछि । धरती नाचि रहल छैक, समय बीति रहल छैक । सोना बाबूकेँ होइत छनि जे ओ सभ दिन संसारेमे रहताह !

छाया

घटाटोप अन्धकार छलैक । एकटा विकराल छाया सामने उपस्थित भेलैक । पैघ भेल गेलैक । घरक आगाँमे ठाढ़ अशोकोक गाछसँ ऊँच भऽ गेलैक । तारोक गाछसँ बढ़ि गेलैक । ओ छाया बढ़िते गेलैक । ऊँच...ऊँच... आर ऊँच । ओ आँखिसँ कात गेलैक । फेर देखबामे आयल । घटि रहल छलैक । नहि, आब बढ़ैत छैक । विकराल छैक । डर...डर... हमरा खा रहल अछि... नहि, खेबा ले' उद्यत अछि... आँखि चोन्हरा रहल अछि । आँखि बन्द नहि कऽ पबैत छी । ओह, आँखियो ने बन्द होइत अछि ! ई छाया, विकराल छाया बढ़िते अछि । कतेक बढ़त ?...??

निरसू मिश्र मृत्युसज्जापर पड़ल विगत साठि वर्षक पापक ऊँचाइ, चौड़ाइ नापि रहल छलाह । आँखिसँ नोर झड़ि रहल छलनि । मुदा तकर आब प्रतिकार की ?

□

रुपैया नष्ट भेल जाइत छन्हि । दोगे-दागे खेलौनाक दुकान पर गेलाह । भीड़ लागल रहैक । ''इसका कितना दाम है, उसका कितना दाम है ?'' करैत एकटा छोटका रेलकेँ जेबीमे राखि बिदा भऽ गेलाह ।

□ □ □ □ □

किछु दिन भेलैक अछि जे ओ मरि गेलाह । लोक सबहक कहब छैक जे अन्नक बेतरे मुइलाह । मरैकाल चारि टा नोरक बुन्न खसलनि । ओ बुन्न छल पोखरिपरहक 'काम'क, ओ बुन्न छल कचहरीक 'क्रोध'क, आरि-धूर देबाकाल 'लोभ'क, खेलौना चोरबैत काल 'मोह'क । प्रायशः ओ अन्तमे बुझि गेल रहथि जे असली दुश्मन के थिक ?

□

दुश्मन

मुसाइ बाबू पोखरिपर दतमनि करैत कहलथिन– ''लोचन नोत देलनि अछि ताहिसँ की, हम नहि जेबनि । हुनकर दुश्मनी भरिजन्म मोन रहत ।'' एतबहिमे पोखरिमे स्नान करैत एक युवतीक आँचर ससरि गेलैक । मुसाइ बाबूक मन मचलि गेलनि । कोनो सिनेमाक नायक जकाँ व्यवहार करऽ लगलाह ।

दोसर दिन कचहरीमे श्याम बाबूक संग जन्मी दुश्मनी ठहरबैत हुनका पर झूठ अभियोग लगा मुकदमा कऽ देलथिन । लोचन जलखै हेतु रुपैया मांगऽ अयलनि तँ आँखि लाल-पीयर करैत बजलाह– पजीपना करैत छह ! सहायता करैत से नहि, तँ हरमजदगी करऽ आयल अछि ।

किछु दिनुका बाद भोजन करैत बजलाह– गंगेशकेँ नौकरी दिऔलियैक । आइ ओ हमर मुद्दै भऽकऽ ठाढ़ भेल अछि ।

फेर किछु रहिकऽ सोचलनि जे पन्द्रह बिगहा जमीन अछि, एक बिगहा और बढ़ा ली । जाली दस्ताबेज बना गंगेशक खेतमे आरि-धूर दऽ अयलाह ।

एक मास भेलैक अछि जे पटना गेल छलाह । छोटका बेटाक प्रति स्नेह उमड़ि अयलनि । सोचलनि जे किछु सनेस लऽ जइयैक । मुदा रुपैया खर्च करब अभीष्ट नहि रहनि । रुपैयाक अभावक कारणेँ पट्टीदार मनोहरकेँ दुश्मन मानलनि । ओकरे संग मुकदमा कयलासँ

प्रतिदान

साठिसँ ऊपर ओकर वयस भऽ गेल छैक । शरीरमे अस्थि टा रहि गेल छैक । मुदा ओ कखनहुँ कोइला लाबय स्टेशन दिस चल जाइत अछि, कतहु झाड़ू-बहारू कऽ अबैत अछि । साँझमे कहियो रुपैया, तँ कहियो अन्न नेने अबैत अछि । टूटल चौकीपर पड़ि रहैत अछि । आइयो खाटपर पड़ले छलि कि बेटा कहलकैक– काज-बात नहि आ आबिकऽ पड़ि रहैत छेँ ! ई पेट कोना भरतै ?

अंग-अंग ओकर टुटि रहल छलैक, तथापि ओ घर बहारऽ लागलि । कनेक सुस्तेबाक हेतु बैसलि कि पुतोहु मुँह नोचऽ लगलैक । उठिकऽ कुहरैत ओ काज करऽ लागलि । घरकेँ साफ कऽ फेर टूटल चौकीपर पड़ि रहलि । सोचैत छलि जे आब खेनाइ आओत । मुदा एगारहक घंटा मारलकैक । केओ एखन धरि नहि टघरलैक । मनकेँ सान्त्वना देबऽ लागलि– की करबैक ? बिसरि गेल होयत !

टूटल कुर्सी

''ओह, केओ नहि अछि । कतय खायब, कोना रहब ? हे भगवान् कखन लऽ जायब !'' टूटल कुर्सीपर बैसल अकच्छ होइत मनोहर बाबू बाजि उठलाह । आफीसर रहथि । दू वर्ष भेलैक अछि जे ओ अवकाश ग्रहण कयलनि । कमाइत रहथि, तखन चारूकात लोकसभ घेरने रहनि । कोनो प्रकारक अभियोग नहि लागय, तेँ स्त्रीक नामसँ रुपैया बैंकमे जमा कयलनि । स्त्रीक नामसँ मकान खरीदि लेलनि । बेटासब आब बंबइ, कलकत्तामे नोकरी करैत छन्हि । स्त्री पतिकेँ छोड़िकऽ नवका मकानमे रहय लगलथिन अछि । रुपैयापर अधिकार जमा लेलथिन । आब एहि खण्डहर बनल मकानमे मनोहर बाबू रहैत छथि आ कि टूटल कुर्सी रहैत अछि ।

□

कर्मठ

बीच मैदानमे बेंचपर बैसल रही । माघ मासक रौद नीक लागि रहल छल । बेंचपर दू गोटे पहिनेसँ बैसल रहथि । हुनका लोकनिमे वार्तालाप भऽ रहल छलनि । हम सुनय लगलहुँ ।

''जीवनमे कोनो बाधा नहि छैक । बाधा आबय, ओकरा तुरत हटा दिऔक । हँ, दया, करुणा, त्यागकेँ कात करऽ पड़त ।''

''मुदा से आदमीसँ कोना हेतैक ? माटिक मूर्ति तँ ओ नहि थिक !''

''आलसीक गप्प थिक । बु□क बिलास थिक । लगनशील मनुख केँ सब-किछु करऽ पड़ैत छैक ।''

ई कहैत दुनू गोटे कने आगू बढ़लाह । बीचहिमे फाटल-चीटल कपड़ा पहिरने सोलह वर्षक एकटा अपंग बालक हुनका पैरपर खसैत बाजल— ''मालिक कुछ दे दू !''

पहिल व्यक्ति जे बाधा हटबऽवला बात कहै छलथिन से लातसँ ठोकर मारैत आगू बढ़ि गेलाह । भिखमंगा ओतहि खसिकऽ हाँफऽ लागल । आ ओ अपन सि□ान्तक पालन कऽ आगाँ बढ़ि चुकल छलाह । मुँहपर कर्मठताक मुस्की छलनि ।

□

प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान	:	**मैथिली रचना मंच** शुभंकरपुर, दरभंगा-846006
©	:	**लेखक**
पहिल खेप	:	**फरवरी, 1975**
दोसर खेप	:	**दिसम्बर, 2010**
पुस्तकालय संस्करण	:	**एक सय टाका**
मुद्रक	:	प्रिंटवेल, टावर चौक, दरभंगा

डुबैत सूर्य

‘‘मालिक पान खेबैक ?...’’ छातीमे पानक बासन लटकौने एकटा कान्तिहीन छौँड़ा पुछलक । ओकर वेश-भूषा देखिकऽ पान खयबाक इच्छा नहि भेल । ट्रेन खुजबापर छलैक । फेर ओ आर्त्तस्वरेँ बाजि उठल— माय दुखित छैक । एक रुपैया पान बेचिकऽ भेलैये । डाक्टर बाबू कहने छथिन से सबा रुपैयामे दबाइ होयत । मालिक ! ...दू ठो पान लगा दू ?

हमरालोकनि पाँच आदमी रही । कहलियैक जे पाँच सीकी लगा दही। ओ लगबऽ लागल । एतबहिमे गाड़ी सीटी देलकैक । हम हबर-हबर कऽ पाइ देबऽ लगलियैक । गाड़ी आस्ते-आस्ते चलऽ लगलैक । पाइ लेलक मुदा गाड़ी आर तेज भऽ गेलैक । ई देखि हम कहलियैक— ‘‘दोसर गाड़ीसँ झंझारपुर घुरि अबिहेँ ।’’ ओ प्रतिरोध करैत बाजल— ‘‘नहि मालिक ! दबाइ जरूरी छैक । दोसर गाड़ी नौ बजे रातिमे छैक । हमरासबकेँ कुदबाक अभ्यास छैक ।’’ आ ओ कुदि पड़ल । नमरिकऽ देखलियैक जे प्लेटफार्मपर कूदल तँ, मुदा चित्ते भरे खसि पड़ल । ‘‘हमरासबकेँ कुदबाक अभ्यास अछि’’— ओ छौँड़ाकेँ की भेलैक ? ओकर मायकेँ की भेलैक ?? की डुबैत सूर्यक संग ओकर भाग्यो डुबि गेलैक ??? ...रेलक गति तेज भऽ गेलैक ।